ResearchGate

See discussions, stats, and author profiles for this publication at: https://www.researchgate.net/publication/325617836

LoPN Hkkjr vfHk;ku dk xkze Lrjh; lw{e v/;;u% xkze ujk;uiqj] rglhy chlyiqj] tuin ihyhHkhr ds fo"k'sk lUnHkZ esa

Article · August 2016

CITATIONS
0

READS
74

2 authors, including:

Mohammad Israr Khan
M.J.P. Rohilkhand University

50 PUBLICATIONS **22** CITATIONS

SEE PROFILE

Some of the authors of this publication are also working on these related projects:

Project Sufism and Humanity View project

Project a b c d a c View project

All content following this page was uploaded by Mohammad Israr Khan on 07 June 2018.

The user has requested enhancement of the downloaded file.

International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 1; Issue 8; August 2016; Page No. 55-61

स्वच्छ भारत अभियान का ग्राम स्तरीय सूक्ष्म अध्ययनः ग्राम नरायनपुर, तहसील बीसलपुर, जनपद पीलीभीत के विशेष सन्दर्भ में

[1] Dr Mohammad Israr Khan, [2] Sarvesh Kumar

[1] Assistant Professor, Department of Applied and Regional Economics, Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India

[2] Research Scholar, Department of Applied and Regional Economics, Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India

सारांश

वर्तमान शोध पत्र में स्वच्छ भारत अभियान के सम्बन्ध में स्वच्छ भारत अभियान एवं इसके विभिन्न आयामों के सम्बन्ध जन सामान्य की जागरूकता एवं प्रतिक्रिया का स्तर जानने का प्रयत्न किया गया है। इस योजना के माध्यम से क्या कार्य किये जा रहे हैं? इन लोगों को इस योजना का लाभ मिल पा रहा है? इस योजना से साफ–सफाई के प्रति जागरूकता का मूल्यांकन किया जा रहा है।

प्रस्तुत शोधपत्र में प्राथमिक सर्वेक्षण पद्धति के आधार पर निदर्श तथा चयनित 50 लोगों से प्राप्त सूचना/आँकड़ों का प्रयोग करते हुए स्वच्छ भारत अभियान के क्रियान्वयन तथा उसके समाज पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

मूल शब्द: शौचालय, स्वच्छता, ग्रामीण स्वच्छता, जल निकास, जल प्रबन्धन।

1 प्रस्तावना

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा 2 अक्टूबर, 2014 को शुरू किया गया। इस योजना का उद्देश्य पूरे देश को स्वच्छ बनाना है। 2 अक्टूबर 2019 तक हर परिवार को शौचालय सहित स्वच्छता सुविधा उपलब्ध करना है, ठोस और द्रव अपशिष्ट निपटान व्यवस्था गांव में सफाई और सुरक्षित तथा पर्याप्त मात्रा में पीने का पानी उपलब्ध करना है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए देश के सभी नागरिकों से आशा व्यक्त की गई है। इस अभियान को शुरू करने से पहले ही निर्धारित कर दिया गया कि यह अभियान केवल सरकार का कर्तव्य नहीं बल्कि राष्ट्र को स्वच्छ बनाने की जिम्मेदारी इस देश के सभी नागरिकों की है। इस अभियान के द्वारा खुले में शौच जाने के कारण विभिन्न प्रकार की बीमारियों का उदय होता है। जैसे हैजा, डायरिया, पीलीया, चेचक, मलेरिया आदि। जिससे सभी नागरिकों पर बुरा असर पड़ता है। इन सभी बीमारियों के कारण सभी विकास के मार्ग से भटक रहे है जो सभी लोगों के प्रयास के बिना सफल बनाना आसान नहीं है। इस अभियान से गरीब एवं निम्न जाति के लोगों को वित्तीय सहायता दी जाती है इस सम्बन्ध में वित्तीय साधनों में केन्द्र एवं राज्य 75:25 का सहयोग होता है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य सभी लोगों को शौचालय उपलब्ध कराकर खुले में शौच से मुक्त राष्ट्र का निर्माण करना है। लोगों के जागरूक होने से इस अभियान को सफलता मिलेगी।

भारत सरकार द्वारा पहले भी कई स्वच्छता कार्यक्रम चलाए गए जिसमें ''पूर्ण स्वच्छता अभियान'' Total Sanitation Comapign (TSC), 1999 एवं जून 2003 में निर्मल ग्राम पुरस्कार योजना तथा इसके बाद 2012 में निर्मल भारत अभियान की शुरूआत हुई। जून 2003 में निर्मल ग्राम पुरस्कार योजना ने लोगों को पूर्ण स्वच्छता को विस्तृत देने पर पर्यावरण को साफ रखने के लिए पंचायत, ब्लाक और जिला द्वारा गांव को खुले में शौच में मुक्त करने के लिए प्रारम्भ की गई। इसके बाद अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत हुई और इसका 2 अक्टूबर 2019 तक पूरे देश को खुले में शौच से मुक्त का लक्ष्य रखा गया है।

स्मार्ट विलेज–स्मार्ट सिटी को स्मार्ट गांव के रूप में केन्द्र सरकार ने स्मार्ट गांवों को विकसित करने के लिए ''श्यामा प्रसाद मुखर्जी मिशन'' योजना को शुरू किया है। स्मार्ट विलेज का मकसद गाँव को स्मार्ट गांव में बदलना, स्थानीय स्तर पर लोगों को रोजगार, महानगरों की ओर पलायन रोकना और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक और विकास को गति देना इस योजना का लक्ष्य है। इसका क्रियान्वयन ग्रामीण विकास मन्त्रालय के अन्तर्गत किया जा रहा है। स्मार्ट विलेज मिशन का लक्ष्य राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों के विकास की क्षमताओं का उपयोग करना है, इससे आर्थिक गतिविधियों, कौशल विकास, स्थानीय उद्यमिता के साथ ही कई सुविधाएं मिलेगी ताकि स्मार्ट गांवों का एक क्लस्टर बन सके। ग्रामीण क्षेत्रों को बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा, समेत बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मिलेंगी और कौशल विकास को बढ़ावा देना इस योजना ग्रामीण क्षेत्रों बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करायी जायेंगी।

स्मार्ट विलेज बनाने के लिए क्लस्टर के अन्तर्गत दी जाने वाली सुविधाएं

स्मार्ट विलेज योजना से देश भर में ग्रामीण शहरी अन्तर मिटाने को 2019–20 तक 300 ग्रामीण क्लस्टर बनाए जाएंगे। एक क्लस्टर की आबादी 25–50 हजार लोगों तक होगी और पहाड़ी और मरूस्थलीय क्षेत्रों में क्लस्टर 5 से 15 हजार की जनसंख्या पर बनेगा।

1. कौशल विकास का प्रशिक्षण
2. कृषि प्रसंस्करण
3. कृषि से जुड़ी सेवाएँ
4. भंडारण व्यवस्था
5. वेयर हाउसिंग
6. डिजिटल साक्षरता

7. स्वच्छता
8. पाइप से जलापूर्ति
9. अपशिष्ट प्रबन्धन
10. सड़कें और नाले
11. स्ट्रीट लाइटें
12. मोबाइल हेल्थ इकाई
13. स्कूलों का उन्नयन
14. गांवों को जोड़ने वाली सड़कें
15. एल0पी0जी0 कनेक्शन
16. ई–ग्राम कनेक्टिविटी
17. सिटीजन सेवा केन्द्र

2 शोध उद्देश्य :–

1. स्वच्छ भारत अभियान के लिए चलाई गई योजनाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
2. शौच के लिए बाहर जाने के कारणों का अध्ययन करना।
3. स्वच्छ भारत अभियान द्वारा जन सामान्य को स्वच्छता व्यवहार में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
4. जागरूकता अभियान की सफलता का विश्लेषण करना।

3 साहित्य समीक्षा

सुरेन्द्र कुमार तिवारी (2014) के अनुसार जल, स्वच्छता, स्वास्थ्य की सुविधा, स्कूल में एक सफल विद्यालय वातावरण और प्रतिरोध बनाता हैं। साफ–सफाई से तथा स्वच्छ जल से रोगों पर नियन्त्रण पाया गया। यह स्वस्थ शारीरिक ज्ञान के वातावरण की ओर पहला कदम हैं। जो ज्ञान और स्वास्थ्य दोनों में लाभ पहुंचाता है।

रूद्रेश एस0के0 के अनुसार स्वच्छता की बुनियादी धारणा मानवीय कार्यों को ऐसे तरीके से व्यवस्थित करना है। जिससे जल और भोजन, दूषित न हो। जिससे स्वच्छता और सम्मानीय जीवन प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

डर्मने अभय बी (नवम्बर 2014) के अनुसार स्वास्थ्य और स्वच्छता मानव जीवन के सबसे महत्वपूर्ण तत्व हैं। पूरे देश में स्वच्छता को विकसित करना और स्वच्छता की व्यवस्था करना जन स्वास्थ्य में सर्वाधिक प्रभावी व्यावधानों के बीच है।

नायक अपर्णा (2014) के अनुसार अगले पाँच वर्षों में स्वच्छ भारत लक्ष्य को पूरा करने का उद्देश्य भारत में स्वच्छता व्यवस्था में परिवर्तन लाकर उसे ठीक करना है। जो समस्यायें पर्यावरण से घनिष्टता से जुड़ी हुई है उन्हें काफी हद तक कम करना। कुड़ा–करकट का निस्तारण करना। आज हम जलवायु परिवर्तन, जल प्रदूषण, रासायनिकों के प्रयोग के दुष्प्रभाव का सामना करते हैं। मुख्य चर–कपड़ा, स्वच्छ भारत, ठोस कचड़े में वृद्धि, कचड़ा प्रबन्धन।

वी0 शर्मा और वद्रा शैलजा (2015) के अनुसार भारत एक विकासशील देश हैं जो स्वच्छता की ओर केन्द्रित करने का प्रयास कर रहा है। राष्ट्र को सुव्यवस्थित करना चाहता है और जलवायु को स्वच्छ बनाने के बिन्दु को व्युत्पन्न करना चाहता है। आधुनिक भारत ये स्वच्छता पर अध्ययन को केन्द्रित करता है।

सुब्बाराव वेन्कट पी0 और एस0 सुमाशेखर (2015) के अनुसार स्कूली शिक्षा विभाग, साक्षरता, मानवीय संसाधन विकास मंत्रालय तथा भारत सरकार ने एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति हेतु स्वच्छ भारत और स्वच्छ विद्यालय को शुरू किया जो इसका निर्माण, देखरेख तथा शौचालयों की मरम्मत का विवरण देता हैं तथा व्यक्तिगत व संगठित, दानकर्ताओं को आमन्त्रित करता है।

शर्मा नीतू, चौधरी रिचा और पुरोहित हर्ष (2014) के अनुसार हरित लेखांकन अभी तक एक मुख्य मुद्दा है और हमारे देश भाग के विकास के लिए महत्वपूर्ण रूप में लिया जा सकता है जैसे भारत के बैंकिंग एवं वित्तीय संस्थान एक आवश्यक रूप में प्रारम्भ किये गए बल्कि उच्च स्तर पर नहीं। भारतीयों के विकास को बनाए रखने के लिए बैकिंग और वित्तीय संस्थान को ज्यादा काम करना होगा।

तमबोली कुमार प्रदीप और कुमावत आर0एल0 (2013) के अनुसार भारत की जनसंख्या 1.21 बिलियन विश्व की जनसंख्या की लगभग $\frac{1}{6}$th के बराबर है। 1980 के शुरूआत में देश में कम से कम 1 प्रतिशत ग्रामीण स्वच्छता को कवर किया गया। 1986 में ग्रामीण स्वच्छता प्रोग्राम (CRSP, Central Rural Senitation Programme) और 2011 के शुरूआत में भारतीय जनसंख्या के बारे में 72.2 प्रतिशत में 16.78 प्रतिशत करोड़ ग्रहणियां 6,38000 गाँवों में थी। पूर्ण स्वच्छता और स्वास्थ्य जनसंख्या के लिए एक सकारात्मक प्रभाव है और इन सब स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य की कमी से इसका सामाजिक तथा आर्थिक प्रभाव पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

स्वच्छ स्कूल स्वच्छ भारत (2014) व्यवस्था का तात्पर्य स्कूल में पीने के साफ पानी का प्रबन्ध और शौचालय की सुविधायें पिछले कुछ वर्षों से बढ़ गयी है। किन्तु अभी मूल रूप से और नियमों के अनुसार उचित व्यवस्था को अधिक सुधार की आवश्यकता है। सबसे अधिक जल और सफाई सुविधायें प्रत्येक दिन प्रयोग में आती हैं। स्वच्छता के लिए ये सुविधायें अनिवार्य रूप से क्रियान्वित की जायें कि स्कूल में साबुन से हाथ धुलने की सुविधाओं की व्यवस्था और देखरेख शामिल हो।

4 शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में स्वच्छ भारत अभियान का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको को लिया गया है, प्राथमिक समंको को शोधकर्ता ने 50 व्यक्तियों का नमूना सर्वेक्षण भेंटवार्ता द्वारा लिया गया है एवं द्वितीयक समंकों को शोध पत्रिकाओं, किताबों एवं इलेक्ट्रानिक यन्त्रों का प्रयोग करके समंको को संग्रहित किया है जिसमें 50 लोगो को नमूना विधि को प्रतिशत के रूप में विश्लेषण किया गया है।

5 विश्लेषण

जनपद पीलीभीत के ब्लाक बरखेड़ा में ग्राम नरायनपुर में सर्वेक्षण द्वारा निम्न सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विश्लेषण दिया गया है।

5.1 सामाजिक–आर्थिक विवरण

सारणी संख्या 1: न्यादर्श विवरण

ग्राम–नरायनपुर	ब्लाक–बरखेड़ा	जिला–पीलीभीत
लिंग	स्त्री–8 प्रतिशत	पुरूष–92 प्रतिशत
धर्म	हिन्दू–96 प्रतिशत	मुस्लिम–4 प्रतिशत
जाति	OBC–90 प्रतिशत	SC–10 प्रतिशत

स्त्रोत–सर्वेक्षण

स्वच्छ भारत अभियान की जागरूकता के बारे में तथा स्वच्छ भारत अभियान की सफलता के बारे में ज्ञात करने के लिए शोधकर्ता ने न्यादर्श में स्वयं के ग्राम में 50 व्यक्तियों से घर–घर जाकर जानकारी प्राप्त की है, जिनमें हिन्दू 96 प्रतिशत, 4 प्रतिशत मुस्लिम और स्त्रियां 8 प्रतिशत, पुरूष–92 प्रतिशत है। इस सर्वेक्षण में OBC के 90 प्रतिशत एवं SC के 10 प्रतिशत लोगों का नमूना लिया गया है।

चित्र संख्या 1: ग्राम नरायनपुर में निर्मल भारत अभियान के अन्तर्गत स्वच्छ शौचालय निर्माण का दृश्य

चित्र संख्या 2: ग्राम नरायनपुर में सी0सी0 रोड एवं दोनों तरफ नाली का दृश्य

स्रोत–शोधार्थी

चित्र संख्या 3: ग्राम नरायनपुर के एक घर में स्नानगृह का दृश्य

चित्र संख्या 4: ग्राम नरायनपुर में नाली एवं खड़न्जे का दृश्य

चित्र संख्या 5: ग्राम नरायनपुर में रसोई का दृश्य

स्रोत–शोधार्थी

चित्र संख्या 6: ग्राम नरायनपुर में पशुशाला का दृश्य

5.2 शौचालय की प्रकृति

शौचालय की प्रकृति को सारणी संख्या 02 में लोग गरीबी एवं आदत के कारण खुले में शौच का प्रयोग करते हैं। लोग साफ सफाई के प्रति कम जागरूक हैं।

सारणी संख्या 2: शौचालय की प्रकृति

प्रश्न क्र0सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	स्वच्छता अभियान के बारे में जानते हैं?	हाँ–86 प्रतिशत नहीं–14 प्रतिशत
2.	क्या आपके घर में शौचलय है?	हाँ–90 प्रतिशत नहीं–10 प्रतिशत
3.	शौचालय क्यों नहीं है?	अनुदान नहीं मिला–3 प्रतिशत बनवा नहीं सके–7 प्रतिशत शौचालय बना है–90 प्रतिशत
4.	शौचालय कहाँ है?	घर–70 प्रतिशत घर के बाहर–20 प्रतिशत शौचालय नहीं–10 प्रतिशत
5.	शौचालय किस प्रकार का है?	शोख्ते वाला–66 प्रतिशत बहने वाला–24 प्रतिशत शौचालय नहीं–10 प्रतिशत
6.	शौचालय कैसा है?	सरकारी–22 प्रतिशत निजी–66 प्रतिशत दोनों–2 प्रतिशत शौचालय नहीं–10 प्रतिशत
7.	क्या शौचालय चालू है?	नहीं–10 प्रतिशत हाँ–80 प्रतिशत शौचालय नहीं है–10 प्रतिशत
8.	शौच के लिए बाहर क्यों जाते हैं?	शौचालय नहीं–10 प्रतिशत अधिक सदस्य–10 प्रतिशत आदत–38 प्रतिशत शौचालय में जाते हैं–42 प्रतिशत

स्रोत–सर्वेक्षण

- आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि स्वच्छ भारत अभियान के बारे में 86 प्रतिशत लोगों को जानकारी है। जबकि 14 प्रतिशत कुछ नहीं जानते है।
- शोध अध्ययन के अनुसार पता चलता है कि 90 प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय है और 10 प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय नहीं है।
- सर्वेक्षण द्वारा शौचालय न होने की अलग अलग वजह पायी गयी 3 प्रतिशत लोगों को अनुदान नहीं मिला और 7 प्रतिशत लोग शौचालय बनवा नहीं सके जबकि 90 प्रतिशत लोगों के पास शौचालय है।
- सर्वेक्षण द्वारा पाया गया कि 70 प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय है एवं 20 प्रतिशत लोगों का शौचालय घर से बाहर है और 10 प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय नहीं है।
- लगभग 22 प्रतिशत लोगों के शौचालय सरकारी पाए गए एवं 66 प्रतिशत निजी और 2 प्रतिशत लोगों के पास दोनों तरह और 10 प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय नहीं है।
- जिन लोगों के घरों में शौचालय है उनमें 66 प्रतिशत शोख्ते वाला एवं 24 प्रतिशत बहने वाला और 10 प्रतिशत घरों में शौचालय नहीं है।
- अध्ययन से पता चलता है कि 80 प्रतिशत लोगों का शौचालय चालू है और 10 प्रतिशत लोगों का चालू नहीं है, और 10 प्रतिशत लोगों के पास शौचालय है ही नही।
- 50 लोगों के सर्वेक्षण में पाया गया कि जो लोग शौच के लिए बाहर जाते हैं उनमें 10 प्रतिशत लोग अधिक सदस्यों की वजह से और 38 प्रतिशत आदत की वजह से और 42 प्रतिशत लोग शौचालय का प्रयोग करते है। जबकि 10 प्रतिशत लोगों के पास शौचालय नहीं है।

स्वच्छ भारत अभियान गन्दगी एवं ओ0 डी0 एफ0 (Open Defecation Free) के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है जिसका लक्ष्य 2 अक्टूबर, 2019 तक 0 प्रतिशत ओ0डी0एफ0 लाना है, जिसको पूरा करने के लिए समाज को साफ–सफाई के प्रति सोच बदलनी होगी।

5.3 शौच आदतें एवं व्यवहार

शौच की आदत एवं व्यवहार का विवरण सारणी संख्या 03 में खुले में शौच के लिए चयनित दूरी और शौच जाने का समय आदि विवरण को निम्न दर्शाया गया है।

सारणी संख्या 3: शौच आदते एवं व्यवहार

प्रश्न क्र0सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	शौच किस समय जाते है।	सुबह–92 प्रतिशत शाम–8 प्रतिशत
2.	एक शौचालय में कितने व्यक्ति इस्तेमाल करते हैं?	6.68 या 7 लगभग
3.	शौच हेतु चयनित स्थान की दूरी क्या है?	257 मी0 लगभग
4.	शौच जाने का रास्ता कैसा है?	गन्दा–40 प्रतिशत साफ–18 प्रतिशत शौचालय में जाते हैं– 42 प्रतिशत

स्रोत–सर्वेक्षण

- सर्वेक्षण के अनुसार 92 प्रतिशत लोग सुबह एवं 8 प्रतिशत लोग शाम को शौच जाते है।
- शोध विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि औसतन 7 व्यक्ति एक शौचालय का इस्तेमाल करते है।
- शोध अध्ययन से पता चलता है कि 257 मी0 औसतन दूरी तक लोग शौच के लिए जाते है।
- शौच जाने के लिए रास्ता 40 प्रतिशत लोगों ने गन्दा बताया और 18 प्रतिशत लोगों ने साफ बताया है और 42 प्रतिशत लोग शौचालय में जाते हैं।

शौच की आदत एवं व्यवहार के कारण लोग आज भी खुले में शौच जाते हैं। लोगों के मन में टहलने, खुली हवा में घूमने की प्रवृत्ति के कारण लोग खुले में शौच जाते हैं और लोग शौचालय का उपयोग नहीं करते हैं।

5.4 शौच एवं स्वच्छता

शौच एवं स्वच्छता सम्बन्धी क्रियाकलापों को सारणी संख्या 04 में दर्शाया गया है। जिसमें साफ सफाई के बारे में विवरण दिया गया है। हाथ धुलने के लिए लोग साबुन या मिट्टी का प्रयोग करते हैं।

सारणी संख्या 4: शौच एवं स्वच्छता

प्रश्न क्र0सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	बाहर शौच हेतु पानी का प्रयोग करते हैं।	डब्बे का–32 प्रतिशत नहर–10 प्रतिशत तालाब–16 प्रतिशत शौचालय में जाते हैं–42 प्रतिशत
2.	आप हाथ किससे धुलते हैं?	मिट्टी–8 प्रतिशत साबुन–92 प्रतिशत
3.	शौचालय की साफ सफाई करते हैं?	रोजाना–38 प्रतिशत सप्ताह–52 प्रतिशत शौचालय नहीं है–10 प्रतिशत
4.	शौचालय की साफ–सफाई किससे करते हैं?	पानी–46 प्रतिशत फिनायल–28 प्रतिशत एसिड–10 प्रतिशत डिटरर्जेन्ट पाउडर–6 प्रतिशत शौचालय नहीं है–10 प्रतिशत
5.	स्वच्छता के लिए आवश्यक है?	सभी स्वच्छता–100 प्रतिशत
6.	आप घर की सफाई करते है?	रोजाना–100 प्रतिशत
7.	क्या आप रोजना नहाते है?	हाँ–80 प्रतिशत नहीं–20 प्रतिशत
8.	पहने हुए कपड़े धुलते है?	80 प्रतिशत डि0 पाउडर 20 प्रतिशत पानी
9.	क्या स्नान गृह है?	हाँ–88 प्रतिशत नहीं–12 प्रतिशत
10.	क्या खाना खाने से पहले हाथ धुलते हैं?	हाँ–100 प्रतिशत

स्रोत–सर्वेक्षण

- शोध से पता चलता है कि 32 प्रतिशत लोग शौच के लिए डब्बे का प्रयोग करते है और 10 प्रतिशत नहर एवं 16 प्रतिशत तालाब के पानी का इस्तेमाल करते है। जबकि 42 प्रतिशत लोग शौचालय का प्रयोग करते हैं।
- शोधकर्ता द्वारा शोध से पता चलता है कि 100 प्रतिशत लोग खाना खाने से पहले हाथ धुलते हैं।
- सर्वे के माध्यम से ज्ञात हुआ कि 92 प्रतिशत लोग साबुन से हाथ धुलते हैं और 8 प्रतिशत लोग मिट्टी से हाथ धोते हैं।
- 38 प्रतिशत लोग अपने शौचालय की साफ सफाई रोजना एवं 52 प्रतिशत लोग सप्ताह में साफ सफाई करते हैं। 10 प्रतिशत लोगों के पास शौचालय नहीं है।
- शौचालय की साफ सफाई करने के लिए 46 प्रतिशत लोग पानी 28 प्रतिशत फिनायल, 10 प्रतिशत एसिड एवं 6 प्रतिशत डिटर्जेन्ट पाउडर से शौचालय की सफाई करते हैं।

- शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में पाया कि 100 प्रतिशत लोग अपने घरों की साफ–सफाई रोजाना करते है।
- शोध विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि 100 प्रतिशत लोगों ने बताया कि स्वच्छता के लिए सभी प्रकार की स्वच्छता आवश्यक है।
- आकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि 80 प्रतिशत लोग कपड़े डि0 पाउडर से एवं 20 प्रतिशत लोग पानी से कपड़े धोते हैं।
- सर्वेक्षण से पता चलता है कि 88 प्रतिशत लोगों के घरों में स्नानगृह है। 12 प्रतिशत लोगों के घरों में स्नानगृह नहीं है।
- सभी व्यक्ति खाना खाने से पहले हाथ धुलते हैं।

स्वच्छता के प्रति लोग अपने घरों में रोजाना साफ–सफाई करते हैं। लोग नहाने के लिए साबुन एवं कपड़ों के लिए डिटरजेंट पाउडर का अधिकतर लोग उपयोग करते हैं, लेकिन कुछ लोग पुराने रीति–रिवाजों को मानकर मिट्टी आदि का हाथ धुलने में प्रयोग करते हैं।

5.5 पानी के माध्यम

जल एवं जल निकास की वर्तमान स्थिति को सर्वेक्षण द्वारा निम्न सारणी में दर्शाया गया है। जिसमें नाली, जल निकास, पीने का पानी एवं गांव के रास्ते का विवरण दिया गया है।

सारणी संख्या 5: पानी के माध्यम

प्रश्न क्र0सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	पानी का क्या साधन है?	निजी नल–80 प्रतिशत इंडिया मार्का हैण्डपम्प–20 प्रतिशत
2.	आपके नल का पानी कहाँ जाता है?	नाली–96 प्रतिशत गड्डे–4 प्रतिशत
3.	क्या आपके घर के पास नाली है?	हाँ–94 प्रतिशत नहीं–6 प्रतिशत
4.	नाली कैसी है?	कच्ची–8 प्रतिशत पक्की–92 प्रतिशत
5.	नाली की सफाई कौन करता है?	स्वयं–44 प्रतिशत सफाई कर्मी–56 प्रतिशत
6.	क्या रास्ते के पानी का निकास है?	हाँ–60 प्रतिशत नहीं–40 प्रतिशत
7.	गांव का रास्ता कैसा है?	कच्चा–14 प्रतिशत पक्का–86 प्रतिशत

स्रोत–सर्वेक्षण

- आकड़ों का विश्लेषण से पता चलता है कि 80 प्रतिशत लोगों के घरों में निजी नल और 20 प्रतिशत घरों में इंडिया मार्का हैंडपम्प का प्रयोग करते है।
- 96 प्रतिशत लोगों के नल का पानी नाली में जाता है और 4 प्रतिशत लोगों के घरों का पानी रास्ते में भरा रहता है।
- शोधकर्ता को ज्ञात हुआ 56 प्रतिशत लोगों के अनुसार नाली की सफाई सफाई कर्मचारीकर्ता है और 44 प्रतिशत लोग स्वयं करते हैं।
- 96 प्रतिशत लोगों के अनुसार सफाई कर्मी रोजाना नहीं आता और 4 प्रतिशत लोगों के अनुसार सफाई कर्मी रोजाना आता है।
- शोधकर्ता के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि 60 प्रतिशत लोगों का जल निकास है और 40 प्रतिशत लोगों का पानी सड़कों पर भरा रहता है।
- 86 प्रतिशत लोगों के गांव का रास्ता पक्का है और 14 प्रतिशत लोगों का रास्ता कच्चा है।

शोध में पाया गया कि पानी के लिए लोग निजी नल, इंडिया मार्का हैंडपम्प, कुओं के जल का प्रयोग करते हैं। अधिकतर लोगों के नल का पानी नालियों में जाता है। लेकिन कुछ लोगों के घर का पानी गड्ढों में जाता है इसके सुधार के लिए सरकार को अनुदान देने की जरूरत है।

5.6 खाना बनाने की व्यवस्था

खाना की बनाने की व्यवस्था को सारणी संख्या 06 में खाने की व्यवस्था को दर्शाया गया है। जिसमें 76 प्रतिशत लोग रसोई घर में और 24 प्रतिशत लोग खुले में खाना बनाते है।

सारणी 6: खाना बनाने की व्यवस्था

प्रश्न क्र0सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	क्या रसोई घर है?	हाँ–76 प्रतिशत नहीं–24 प्रतिशत
2.	खाना किस पर बनता है?	रसोई गैस–64 प्रतिशत चूल्हा–36 प्रतिशत
3.	खाना कहां बनता है?	रसोई में–76 प्रतिशत खुले में–24 प्रतिशत

स्रोत–सर्वेक्षण

- अध्ययन के अनुसार गांव में 76 प्रतिशत लोगों के रसोई घर है और 24 प्रतिशत लोगों का खाना खुले में बनता है।
- गरीबी के कारण 36 प्रतिशत लोगों का खाना चूल्हे पर बनता है और 64 प्रतिशत लोगों का खाना रसोई गैस पर बनता है।

शोध में पाया गया कि अधिकतर घरों का खाना रसोई गैस पर बनता है और कुछ लोग गरीबी के कारण खाना चूल्हें पर बनाते है। अतः गाँवों में सस्ती दर पर रसोई गैस कनेक्शन दिया जाए, और लोगों को धुएँ से होने वाले दुष्परिणामों से अवगत कराया जाये।

5.7 घर का प्रकार

घर के प्रकार को सारणी संख्या 07 में दर्शाया गया है। जिसमें घर एवं पशुशाला की सुविधाओं का विवरण दिया गया है।

सारणी संख्या 7: घर का प्रकार

प्रश्न क्र0सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	घर कैसा है?	पक्का–68 प्रतिशत कच्चा–32 प्रतिशत
2.	क्या आपके घर में बैठक है?	हाँ–62 प्रतिशत नहीं–38 प्रतिशत
3.	क्या आपके घर में बिजली है?	हाँ–68 प्रतिशत नहीं–32 प्रतिशत
4.	क्या आपके घर में पशुशाला है?	हाँ–98 प्रतिशत नहीं–2 प्रतिशत

स्रोत–सर्वेक्षण

- आकड़ों का अध्ययन करने से पता चलता है कि 68 लोगों का घर पक्का है और 32 प्रतिशत लोगों का मकान गरीबी के कारण कच्चा मकान में जीवन निर्वाह करते है।
- अध्ययन की रिपोर्ट से पता चलता है कि घर में 62 लोगों के बैठक है एवं 38 प्रतिशत लोगों के घरों में बैठक नहीं है।
- 68 प्रतिशत लोगों के घरों में बिजली कनेक्शन है और 32 प्रतिशत लोग कैरोसीन तेल एवं सोलर पैनल का उपयोग करते है।

- सर्वेक्षण से पता चलता है कि 88 प्रतिशत लोगों के घरों में पशुशाला है और 12 प्रतिशत लोगों के पास नहीं है।

शोध में पाया गया गाँवों में लोगों का जीवन स्तर निम्न है एवं लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं मजदूरी है जिस कारण लोग रहने के लिए कच्चे मकान और प्रकाश के लिए कैरोसीन आयल का प्रयोग करते हैं।

5.8 महिलाओं की सुरक्षा एवं विकास

महिलाओं की सुरक्षा की स्थिति को सारणी संख्या 08 में खुले में शौच जाने से महिलाओं की सुरक्षा एवं बेटा बेटी की शिक्षा में समानता को दर्शाया गया है।

सारणी संख्या 8: महिलाओं की सुरक्षा एवं विकास

प्रश्न क्र0सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	क्या खुले में जाने से महिलाएँ सुरक्षित है?	हाँ–0 प्रतिशत नहीं–100 प्रतिशत
2.	आप किसे पढ़ाना चाहते है?	बेटा, बेटी दोनो–100 प्रतिशत

स्रोत–सर्वेक्षण

- खुले में शौच जाने से महिलाएं सुरक्षित नहीं है यह सब जानते है। लेकिन फिर भी महिलाओं को खुले में शौच जाना पड़ता है।
- 100 प्रतिशत लोग अपने बेटे और बेटियों को समान शिक्षा देना चाहते है।

शोध में पाया गया कि खुले में शौच जाने से महिलाएं सुरक्षित नहीं है, लेकिन शौचालय न होने से खुले में शौच जाना पड़ता है। महिलाओं की शिक्षा स्तर में सुधार से बेटा–बेटियों को समानता प्राप्त होगी।

5.9 परिवार का आकार

परिवार के आकार को सारणी संख्या 09 में दर्शाया गया है। जिसमें अधिकतर परिवार कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी द्वारा जीवन यापन करते हैं।

सारणी संख्या 9: परिवार का आकार

प्रश्न क्र0सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	परिवार के सदस्यों की संख्या है।	औसतन–7
2.	परिवार के कमाने वालो की संख्या है।	लगभग–2 व्यक्ति

स्रोत–सर्वेक्षण

- शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण में पाया गया कि 50 परिवारों की सदस्यों का औसत 7 है और कमाने वालो की संख्या 02 है।

शोध में पाया गया कि अशिक्षित होने के कारण परिवार का आकार बड़ा है और कमाने वालों की संख्या कम है। महिलाओं की शिक्षा से जनसंख्या नियंत्रण प्रभावी हो जाता है।

5.10 सरकारी क्षेत्र की भूमिका

सरकारी क्षेत्र की भूमिका को सारणी संख्या 10 में दर्शाया गया है। जिसमें शौचालय टिकाऊ नहीं बन पाते लोगों को काम के लिए रिश्वत देनी पड़ती है जिससे लोगों को खुले में शौच जाना पड़ता है।

सारणी संख्या 10: सरकारी क्षेत्र की भूमिका

प्रश्न क्र0सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	क्या सरकार द्वारा बनाए गए शौचालय टिकाऊ है?	नहीं–100 प्रतिशत
2.	क्या शौचालय बनाने का काम वास्तविकता में पूरा हो गया है?	नहीं–100 प्रतिशत
3.	बिना रिश्वत दिए आपका काम होता है?	हाँ–20 प्रतिशत नहीं–80 प्रतिशत

स्रोत–सर्वेक्षण

- आँकड़ों के अनुसार भारत सरकार द्वारा शौचालय के लिए 12000 रूपये धनराशि सरकार द्वारा दी जाती है लेकिन शौचालय बनाने का काम ठेकेदार को दे दिया जाता है ठेकेदार उपयुक्त और अच्छी क्वालिटी का माल प्रयोग नहीं करते और सस्ता मैटेरियल लगाकर शौचालय टिकाऊ नहीं बना पाते है।

किसी देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए सरकारी क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण है। इसके लिए सरकार को अनुदान देने की आवश्यकता है। सरकार को आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए ''मनरेगा'' जैसे कार्यक्रमों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में जीविकोपार्जन में सहायता मिलती है।

6 प्राप्तियां

स्वच्छ भारत अभियान शोधकर्ता द्वारा प्राथमिक आकड़ों को एकत्रित करते समय इस अभियान के लाभों को जाना गया है शोधकर्ता ने पाया कि इसके माध्यम से लोगों को निम्नलिखित लाभ प्राप्त हो रहे है।

- शोध से पता चलता है कि काफी लोगों को खुले में शौच जाने को रोका गया है और 90 प्रतिशत लोगों को घरों में शौचालय है।
- स्वच्छ भारत अभियान को लोगों को 86 प्रतिशत लोगों को जानकारी है।
- सर्वेक्षण से पता चलता है कि 100 प्रतिशत लोग खाना खाने से पहले हाथ धुलते है।
- सर्वेक्षण से पता चलता है कि 76 प्रतिशत लोगों का खाना रसोई घर में बनता है।
- सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि 100 प्रतिशत लोग अपने घर की सफाई नियमित रूप से करते है।
- स्वच्छ भारत अभियान द्वारा लोगों के आदतों एवं व्यवहार में बदलाव आया। यह सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है।
- स्वच्छता के लिए लोग 80 प्रतिशत के पास निजी नल का प्रयोग करते हैं।

7 स्वच्छ भारत अभियान की वर्तमान सीमाएं

सर्वेक्षण में पाया गया कि अभी लगभग 10 प्रतिशत लोगों के पास शौचालय नही है और 14 प्रतिशत लोग स्वच्छ भारत अभियान के बारे में नहीं जानते है और 10 प्रतिशत लोगों के घरो में शौचालय होते हुए सुचारू रूप से चालू नहीं है। शोधकर्ता को सर्वेक्षण के द्वारा निम्नलिखित सीमाएं प्राप्त हुई।

- 14 प्रतिशत लोग स्वच्छ भारत अभियान के बारे में जानते नहीं है।
- अध्ययन से पता चलता है कि गरीबी के कारण 10 प्रतिशत लोगों के घरो में शौचालय सुविधा उपलब्ध नहीं है।
- अध्ययन से पता चलता है कि 10 प्रतिशत लोग अधिक सदस्य एवं 38 प्रतिशत लोग आदत और 10 प्रतिशत लोगों के पास

शौचालय नहीं होने से खुले में शौच जाते और 42 प्रतिशत लोगों के पास शौचालय है।
- सर्वेक्षण से पता चलता है कि 8 प्रतिशत लोग अब भी मिट्टी से हाथ धुलते हैं।
- सर्वेक्षण से पता चलता है कि 14 प्रतिशत लोगों के आने जाने का रास्ता कच्चा है इससे पता चलता है कि सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं का लाभ पूरी तरह से नहीं मिल पा रहा है।
- सर्वेक्षण से पता चलता है कि 32 प्रतिशत लोगों के घरों में गरीबी के कारण बिजली कनेक्शन नहीं है।

8 सुधार

स्वच्छता अभियान द्वारा लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए। आज भी 14 प्रतिशत लोग स्वच्छ भारत अभियान के बारे में नहीं जानते है। स्वच्छ भारत अभियान को जागरूकता अभियान की आवश्यकता है, टेलीविजन, रेडियो, अखबार, नुक्कड़ नाटक एवं विद्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए।

- आज भी गरीबी के कारण जिन लोगों के घरों में शौचालय नहीं है उन्हें सरकार द्वारा शौचालय के लिए धनराशि उपलब्ध करायी जानी चाहिए।
- आज भी 32 प्रतिशत लोगों के पास बिजली कनेक्शन नहीं है तो सरकार को चाहिए सस्ती दर पर बिजली कनेक्शन उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- 38 प्रतिशत लोग आदत के कारण खुले में शौच जाते है इन लोगों को जागरूक किए जाना चाहिए। 58 प्रतिशत लोग खुले में शौच जाते हैं और 42 प्रतिशत लोग शौचालय का प्रयोग करते हैं। अतः खुले में शौच को रोकने के लिए शौचालय के प्रति लोगों को जागरूक करने की जरूरत है।

9 निष्कर्ष

सर्वेक्षण के द्वारा पाया गया कि सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छ भारत अभियान के परिणाम स्वरूप 90 प्रतिशत उपलब्ध लोगों के पास शौचालय सुविधा है और 10 प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय सुविधा उपलब्ध नहीं है। किन्तु शौचालय होने के बावजूद कुछ लोग आदत की वजह से और कुछ लोग परिवार में अधिक सदस्यों की वजह से खुले में शौच के लिए जाते है। गांव में जल निकास की उचित व्यवस्था है लेकिन नाली की साफ–सफाई नहीं होने के कारण पानी रास्ते में भरा रहता है गांव में रास्ते के लिए सरकार द्वारा सी0 सी0 रोड का निर्माण कराया गया जिससे लोगों के निकलने का रास्ता साफ हुआ है गांव में लोगों का जीवन स्तर निम्न है अधिकतर लोग कृषि एवं पशुपालन से ही जीविकोपार्जन करते है।

सर्वेक्षण के आधार पर यह पाया गया कि स्वच्छता के अभाव के कारण लोग बीमारी का शिकार हो जाते हैं जिसके कारण लोगों की कार्य क्षमता कम हो जाती है और लोग गरीबी के दुश्चक्र में फँस जाते है। गरीबी के कारण अपनी बीमारी का इलाज सही से नहीं करवा पाते है और वे शारीरिक रूप से दुर्बल हो जाते है जिसके कारण उनकी कार्य क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता और लोग गरीबी के दुश्चक्र में फँस जाते है।

यदि लोग स्वच्छता का ध्यान रखे तो लोग बीमारी व गरीबी से बचेंगे और उनका पैसा व्यर्थ में नही जायेगा तो लोगों के जीवन स्तर सुधार होगा तो देश का आर्थिक विकास होगा। महान समाजशास्त्री अरस्तू ने भी कहा था कि ''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।'' लोगों के ''स्वच्छता'' के प्रति जाति–धर्म से आगे बढ़कर आने की जरूरत है। जिससे एक स्वस्थ एवं सुखी समाज की कल्पना की जा सकती है और देश को विकास की ओर अग्रसर किया जा सकता है।

10. References

1. Surendra Kumar Tiwari. The Study of Awareness of A National Mission: Swachh Vidyalaya in the Middle School Students of Private and Public Schools, PARIPEX-Indian Journal of Research, ISSN 2250-1991, 2014. www.paripex.in, http://indianjournalresearch.com
2. Rudresh Kumar Sugam, Sonali Mittra, Arunabha Ghosh. Kachra Mukt, "Shouchalaya Yukt Bharat", Council on Energy, Environment and Water, 2014, 584. http://ceew.in
3. Mane Abhay B. Swachh Bharat Mission for India's Sanitation Problem: Need of the Hour", Uniqe Journal of Medical and Dental Sciences, ISSN 2347-5579, Mane Abhay UJMDS 2014; 02(04):58-60. www.ujconline.net
4. Aparna Nayak. Clean India. Journal of Geoscience and Environment Protection, 03, 133-139. doi : 10.4236/gep. 2015. 35015. http://creativecommous.org/licenses/ 4.0/28 July 2015
5. Sharma V, Badra Shailja. International Journal of Advance Research in Science and Engineering IJARSE, 2015; 4(01). ISSN – 2319-8354 (E), http://www.IJARSE.com
6. Venkata Subbarao P, Somasekhar S. Swachh Bharat : Some Issues and Concern, International Journal of Academic Research, ISSN 2348-7666, 2015; 2(4), http://ijar.org.in
7. Neetu Sharma, Richa Chaudhary, Harsh Purohit. A Comparative Study on Green Initiatives Taken by Selected Public and Private Sector Banks in Mumbai" ISOR Journal of Business and Management (IOSR-JBM) e-ISSN: 2278-4878, -2319-7678. 2014, 32-37. www.josrjournals.org
8. Pradeep Kumar Tamboli, Kumawat RL. Role of Corporate Social Responsibility (CSR) in Swachh Bharat Abhiyan, "ASM" International E-Journal ongoing Research in Management and IT, 2015, 190. E ISSN-2320-0065, http://www.asme_Journal.com
9. A National Mission A Hand Book, Swachh Bharat Swachh Vidyalaya, 2014. http://scholar.harvard.edu/files/adukia/files/adukia_sanitation_and_education.pdf
10. www.jansatta.com/Tag/Smartvillage flrEcj 17] 2015] tulRrk eq[; i`'B 18
11. www.smart.ap.gov.in/
12. www.patrika.com/../smart-village-7316/

View publication stats